Passion Reading in Hindi

प्रभु येसु का दुखभोग (मारकुस 14 & 15)

C: Commentator J: Jesus CR: Crowd M: Man W: Woman

C	संत मारकुस के अनुसार प्रभु येसु ख्रीस्त का दुखभोग।
C	पास्का तथा बेख़मीर रोटी के पर्व में दो दिन रह गये थे। महायाजक और शास्त्री येसु को छल से गिरफ़्तार करने और मरवा देने का उपाय ढूँढ़ रहे थे। फिर भी वे कहते थे,
CR	"पर्व के दिनों में नहीं। कहीं ऐसा न हो कि जनता में हंगामा हो जाये।"
C	जब येसु बेथानिया में सिमाने कोढ़ी के यहाँ भोजन कर रहे थे, तो एक महिला संगमरमर के पात्र में असली जटामांसी का बहुमूल्य इत्र ले कर आयी। उसने पात्र तोड़ कर येसु के सिर पर इत्र ऊँढ़ेल दिया। इस पर कुछ लोग झुंझला कर एक दूसरे से बोले,
CR	"इत्र का यह अपव्यय क्यों? यह इत्र तीन सौ दीनार से अधिक में बिक सकता था और इसकी कीमत ग़रीबों में बाँटी जा सकती थी"
C	और वे उसे झिड़कते रहे। येसु ने कहा,
J	"इसको छोड़ दो। इसे क्यों तंग करते हो? इसने मेरे लिए भला काम किया। ग़रीब तो बराबर तुम लोगों के साथ रहेंगे। तुम जब चाहो, उनका उपकार कर सकते हो; किन्तु मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। यह जो कुछ कर सकती थी, इसने कर दिया। इसने दफ़न की तैयारी में पहले ही से मेरे शरीर पर इत्र लगाया। मैं तुम लोंगों से यह कहता हूँ- सारे संसार में जहाँ कहीं सुसमाचार का प्रचार किया जायेगा, वहाँ इसकी स्मृति में इसके इस कार्य की भी चर्चा होगी।"
C	बारहों में से एक, यूदस इसकारियोती, महायाजकों के पास गया और उसने येसु को उनके हवाले करने का प्रस्ताव किया। वे यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे रुपया देने का वादा किया और यूदस येसु को पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ता रहा। बेख़मीर रोटी के पहले दिन, जब पास्का के मेमने की बलि चढ़ायी जाती है, शिष्यों ने येसु से कहा,
CR	"आप क्या चाहते हैं? हम कहाँ जा कर आपके लिए पास्का भोज की तैयारी करें?"
C	येसु ने दो शिष्यों को यह कहते हुए भेजा,
J	"शहर जाओ। तुम्हें पानी का घड़ा लिये एक पुरुष मिलेगा। उसके पीछे-पीछे चलो। और जिस घर में वह प्रवेश करे, उस घर के स्वामी से यह कहो, 'गुरुवर कहते हैं- मेरे लिए अतिथिशाला कहाँ हैं, जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ पास्का का भोजन करूँ?' और वह तुम्हें ऊपर सजा-सजाया बड़ा कमरा दिखा देगा वहीं हम लोगों के लिए तैयार करो।"

C	शिष्य चल पड़े। येसु ने जैसा कहा था, उन्होंने शहर पहुँच कर सब कुछ वैसा ही पाया और पास्का-भोज की तैयारी कर ली। सन्ध्या हो जाने पर येसु बारहों के साथ आये। जब वे बैठ कर भोजन कर रहे थे, तो येसु ने कहा,
J	"मैं तुम लोगों से यह कहता हूँ- तुम में से ही एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वा देगा"।
C	वे बहुत उदास हो गये और एक-एक कर उन से पूछने लगे,
M	"कहीं वह मैं तो नहीं हूँ?"
C	येसु ने उत्तर दिया,
J	"वह बारहों में से ही एक है, जो मेरे साथ थाली में खा रहा है। मानव पुत्र तो चला जाता है, जैसा कि उसके विषय में लिखा है; परन्तु धिक्कार उस मनुष्य को, जो मानव पुत्र को पकड़वाता है! उस मनुष्य के लिए अच्छा यही होता कि वह पैदा ही नहीं हुआ होता।"
C	उनके भोजन करते समय येसु ने रोटी ले ली, और आशिष की प्रार्थना पढ़ने के बाद उसे तोड़ा और यह कहते हुए शिष्यों को दिया,
J	"ले लो, यह मेरा शरीर है"।
C	तब उन्होंने प्याला ले कर धन्यवाद की प्रार्थना पढ़ी और उसे शिष्यों को दिया और सब ने उस में से पीया। येसु ने उन से कहा,
J	"यह मेरा रक्त है, विधान का रक्त, जो बहुतों के लिए बहाया जा रहा है। मैं तुम से यह कहता हूँ- जब तक मैं ईश्वर के राज्य में नवीन रस न पी लूँ, तब तक मैं दाख का रस फिर नहीं पिऊँगा।"
C	भजन गाने के बाद वे जैतून पहाड़ चल दिये। येसु ने उन से कहा,
J	"तुम सब विचलित हो जाओगे; क्योंकि यह लिखा है- मैं चरवाहे को मारूँगा और भेडें तितर-बितर हो जायेंगी। किन्तु अपने पुनरुत्थान के बाद मैं तुम लोगों से पहले गलीलिया जाऊँगा।"
C	इस पर पेत्रुस ने कहा,
M	"चाहे सभी विचलित हो जायें, किन्तु मैं विचलित नहीं होऊँगा"।
C	येसु ने उत्तर दिया,
J	"मैं तुम से यह कहता हूँ- आज, इसी रात को, मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले ही तुम मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे"।
C	किन्तु वह और भी ज़ोर से यह कहता जाता था,
M	"मुझे आपके साथ चाहे मरना ही क्यों न पड़े, मैं आप को कभी अस्वीकार नहीं करूँगा"
C	और सभी शिष्य यही कहते थे। वे गेथसेमनी नामक बारी पहुँचे। येसु ने अपने शिष्यों से कहा

J	"तुम लोग यहाँ बैठे रहो। मैं तब तक प्रार्थना करूँगा।"
C	वे पेत्रुस, याकूब और योहन को अपने साथ ले गये। वे भयभीत तथा व्याकुल होने लगे और उनसे बोले,
J	"मेरी आत्मा इतनी उदास है कि मैं मरने-मरने को हूँ। यहाँ ठहर जाओ और जागते रहो।"
C	वे कुछ आगे बढ़ कर मुँह के बल गिर पड़े और यह प्रार्थना करते रहे कि यदि हो सके, तो यह घड़ी उन से टल जाये। उन्होंने कहा,
J	"अब्बा! पिता! तेरे लिए सब कुछ सम्भव है। यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो।"
C	तब वे अपने शिष्यों के पास गये और उन्हें सोया हुआ देख कर पेत्रुस से बोले,
J	"सिमोन! सोते हो? क्या तुम घण्टे भर भी मेरे साथ नहीं जाग सके? जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तत्पर है, परन्तु शरीर दुर्बल"
C	और उन्होंने फिर जा कर उन्हीं शब्दों को दुहराते हुए प्रार्थना की। लौटने पर उन्होंने अपने शिष्यों को फिर सोया हुआ पाया, क्योंकि उनकी आंखें भारी थीं। वे नहीं जानते थे कि क्या उत्तर दें। येसु जब तीसरी बार अपने शिष्यों के पास आये, तो उन्होंने उन से कहा,
J	"अब तक सो रहे हो? अब तक आराम कर रहे हो? बस! वह घड़ी आ गयी है। देखो! मानव पुत्र पापियों के हवाले कर दिया जायेगा। उठो! हम चलें। मेरा विश्वासघाती निकट आ गया है।"
C	येसु यह कह ही रहे थे कि बारहों में से एक यूदस आ गया। उसके साथ तलवारें और लाठियाँ लिये एक बड़ी भीड़ थीं, जिसे महायाजकों, शास्त्रियाँ और नेताओं ने भेजा था। विश्वासघाती ने उन्हें यह कहते हुए संकेत दिया था,
M	"मैं जिसका चुम्बन करूँगा, वही हैं। उसी को पकड़ना और सावधानी से ले जाना।"
C	उसने सीधे येसु के पास आ कर कहा,
M	"गुरुवर!"
C	और उनका चुम्बन किया। तब लोगों ने येसु को पकड़ कर गिरफ़्तार कर लिया। इस पर येसु के साथियों में एक ने अपनी तलवार खींच ली और प्रधानयाजक के नौकर पर चला कर उसका कान उड़ा दिया। येसु ने भीड़ से कहा,
J	"क्या तुम लोग मुझे डाकू समझते हो, जो तलवारें और लाठियाँ ले कर मुझे पकड़ने आये हो? मैं तो प्रतिदिन तुम्हारे सामने मन्दिर में शिक्षा दिया करता था, फिर भी तुमने मुझे गिरफ़्तार नहीं किया। यह इसलिए हो रहा है कि धर्मग्रन्थ में जो लिखा है, वह पूरा हो जाये।"
C	तब सभी शिष्य येसु को छोड़ कर भाग गये। एक युवक, अपने नंगे बदन पर चादर

	ओढ़े, येसु के पीछे हो लिया। भीड़ ने उसे पकड़ लिया, किन्तु वह चादर छोड़ कर नंगा ही भाग गया। वे येसु को प्रधानयाजक के यहाँ ले गये। सभी महायाजक नेता और शास्त्री इकट्ठे हो गये थे। पेत्रुस कुछ दूरी पर येसु के पीछे-पीछे चला। वह प्रधानयाजक के महल पहुँच कर अन्दर गया और नौकरों के साथ बैठा हुआ आग तापता रहा। महायाजक और सारी महासभा येसु को मरवा डालने के उद्देश्य से उनके विरुद्ध गवाही खोज रही थी, परन्तु वह मिली नहीं। बहुत-से लोगों ने तो उनके विरुद्ध झूठी गवाही खोज दी, किन्तु उनके बयान मेल नहीं खाते थे। तब कुछ लोग उठ खड़े हो गये और उन्होंने यह कहते हुए उनके विरुद्ध झूठी गवाही दी,
CR	"हमने इस व्यक्ति को ऐसा कहते सुना- मैं हाथ का बनाया हुआ यह मन्दिर ढ़ा दूँगा और तीन दिनों के अन्दर एक दूसरा खड़ा करूँगा, जो हाथ का बनाया हुआ नहीं होगा"।
C	किन्तु इसके विषय में भी उनके बयान मेल नहीं खाते थे। तब प्रधानयाजक ने सभा के बीच में खड़ा हो कर येसु से पूछा,
M	"ये लोग तुम्हारे विरुद्ध जो गवाही दे रहे हैं, क्या इसका कोई उत्तर तुम्हारे पास नहीं है"
C	परन्तु येसु मौन रहे और उत्तर में एक शब्द भी नहीं बोले। इसके बाद प्रधानयाजक ने येसु से पूछा,
M	"क्या तुम मसीह, परमस्तुत्य के पुत्र हो?"
C	येसु ने उत्तर दिया,
J	"मैं वही हूँ। आप लोग मानव पुत्र को सर्वशक्तिमान् ईश्वर के दाहिने बैठा हुआ और आकाश के बादलों पर आता हुआ देखेंगे।"
C	इस पर महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ कर कहा,
M	"अब हमें गवाहों की ज़रूरत ही क्या है? आप लोगों ने तो ईश-निन्छा सुनी है। आप लोगों का क्या विचार है?"
C	और सब का निर्णय यह हुआ कि येसु प्राणदण्ड के योग्य हैं। तब कुछ लोग उन पर थूकने लगे और उनकी आंखों पर पट्टी बाँध कर यह कहते हुए उन्हें घूँसे मारने लगे,
CR	"यदि तू नबी है, तो बता- तुझे किसने मारा?"
C	नौकर भी उन्हें थप्पड़ मारते थे। पेत्रुस उस समय नीचे प्रांगण में था। प्रधानयाजक की एक नौकरानी ने पास आ कर पेत्रुस को आग तापते हुए देखा और उस पर दृष्टि गड़ा कर कहा,
W	"तुम भी येसु नाज़री के साथ थे"
C	किन्तु उसने अस्वीकार करते हुए कहा,
M	"मैं न तो जानता हूँ और न समझता ही कि तुम क्या कह रही हो"।

C	इसके बाद पेत्रुस फाटक की ओर निकल गया और मुर्गे ने बाँग दी। नौकरानी उसे देख कर पास खड़े लोगों से फिर कहने लगी,
W	"यह व्यक्ति उन्हीं लोगों में एक है"।
C	किन्तु उसने फिर अस्वीकार किया। इसके थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े हुए लोग बोले,
CR	"निश्चय ही तुम उन्हीं लोगों में एक हो- तुम तो गलीली हो"।
C	इस पर पेत्रुस कोसने और शपथ खा कर कहने लगा कि तुम जिस मनुष्य की चर्चा कर रहे हो, मैं उसे जानता भी नहीं। ठीक उसी समय मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी और पेत्रुस को येसु का यह कहना याद आया- मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले ही तुम मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे, और वह फूट-फूट कर रोता रहा। दिन निकलते ही महायाजकों, नेताओं और शास्त्रियों अर्थात् समस्त महासभा ने परामर्श किया। इसके बाद उन्होंने येसु को बाँधा और उन्हें ले जा कर पिलातुस के हवाले कर दिया। पिलातुस ने येसु से यह पूछा,
M	"क्या तुम यहूदियों के राजा हो?"
C	येसु ने उत्तर दिया,
J	"आप ठीक ही कहते हैं"।
C	तब महायाजक उन पर बहुत-से अभियोग लगाते रहे। पिलातुस ने फिर येसु से पूछा,
M	"देखो, ये तुम पर कितने अभियोग लगा रहे हैं। क्या इनका कोई उत्तर तुम्हारे पास नहीं है?"
C	फिर भी येसु ने उत्तर में एक शब्द भी नहीं कहा। इस पर पिलातुस को बहुत आश्चर्य हुआ। पर्व के अवसर पर राज्यपाल लोगों की इच्छानुसार एक बन्दी को रिहा किया करता था। उस समय बराबब्स नामक व्यक्ति बन्दीगृह में था। वह उन विद्रोहियों के साथ गिरफ़्तार हुआ था, जिन्होंने राजद्रोह के समय हत्या की थी। जब भीड़ आ कर राज्यपाल से निवेदन करने लगी कि आप जैसा करते आये हैं, वैसा सा ही हमारे लिए करें, तो पिलातुस ने उन से कहा,
M	"क्या तुम लोग चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को रिहा करूँ?"
C	वह जानता था कि महायाजकों ने ईर्ष्या से येसु को पकड़वाया है। किन्तु महायाजकों ने लोगों को उभाड़ा कि वे बराब्बस की ही रिहाई की माँग करें। पिलातुस ने फिर भीड़ से पूछा,
M	"तो, मैं इस मनुष्य का क्या करूँ, जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो?"
C	लोगों ने उत्तर दिया,
CR	"इसे क्रूस दिया जावे"।
C	पिलातुस ने कहा,
M	"क्यों? इसने कौन-सा अपराध किया?"

C	किन्तु वे और भी जोर से चिल्ला उठे,
CR	"इसे क्रूस दिया जाये"।
C	तब पिलातुस ने भीड़ की माँग पूरी करने का निश्चय किया। उसने उन लोगों के लिए बराब्बस को मुक्त किया और इसा को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने सैनिकों के हवाले कर दिया। इसके बाद सैनिकों ने येसु को राज्यपाल के भवन के अन्दर ले जा कर उनके पास सारी पलटन एकत्र कर ली। उन्होंने येसु को लाल चोंगा पहनाया और काँटों का मुकुट गूँथ कर उनके सिर पर रख दिया। तब वे यह कहते हुए उनका अभिवादन करने लगे,
CR	"यहूदियों के राजा, प्रणाम!"
C	वे उनके सिर पर सरकण्डा मारते थे, उन पर थूकते और उनके सामने घुटने टेकते हुए उन्हें प्रणाम करते थे। उनका उपहास करने के बाद उन्होंने चोंगा उतार कर उन्हें उनके निजी कपड़े पहना दिये। वे येसु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए शहर के बाहर ले चले। उन्होंने कुरेने-निवासी सिमोन, सिकन्दर और रूफुस के पिता को, जो खेत से लौट रहा था, येसु का क्रूस उठा कर चलने के लिए बाध्य किया। वे येसु को गोलगोथा, अर्थात् खोपड़ी की जगह, ले गये। वहाँ लोग येसु को गन्धरस मिली अंगूरी पिलाना चाहते थे, किन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार किया। उन्होंने येसु को क्रूस पर चढ़ाया और किसे क्या मिले- इसके लिए चिट्टी डाल कर उनके कपड़े बाँट लिये। जब उन्होंने येसु को क्रूस पर चढ़ाया उस समय पहला पहर बीत चुका था। दोषपत्र इस प्रकार था-'यहूदियों का राजा'। येसु के साथ ही उन्होंने दो डाकुओं को क्रूस पर चढ़ाया- एक को उनके दायें और दूसरे को उनके बायें। इस प्रकार धर्मग्रन्थ का यह कथन पूरा हो गया- उसकी गिनती कुकर्मियों में हुई। उधर से आने-जाने वाले लोग येसु की निन्दा करते और सिर हिलाते हुए यह कहते थे,
CR	"ऐ मन्दिर ढ़ाने वाले और तीन दिनों के अन्दर उसे फिर बना देने वाले! क्रूस से उतर कर अपने को बचा"।
C	महायाजक और शास्त्री भी उनका उपहास करते हुए आपस में यह कहते थे,
CR	"इसने दूसरों को बचाया, किन्तु यह अपने को नहीं बचा सकता। यह तो मसीह, इस्राएल का राजा है। अब यह क्रूस से उतरे, जिससे हम देख कर विश्वास करें।"
C	जो येसु के साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, वे भी उनका उपहास करते थे। दोहपर से तीसरे पहर तक पूरे प्रदेश पर अँधेरा छाया रहा। तीसरे पहर येसु ने ऊँचे स्वर से पुकारा,
J	"एलोई! एलोई! लामा सबाखतानी?"
C	इसका अर्थ है- मेरे ईश्वर! मेरे ईश्वर! तूने मुझे क्यों त्याग दिया है? यह सुन कर पास खड़े लोगों में से कुछ ने कहा,
CR	"देखो! यह एलियस को बुला रहा है"।

C	उन में से एक ने दौड़ कर पनसोख्ता खट्टी अंगूरी में डुबाया, उसे सरकण्डे में लगाया और यह कहते हुए येसु को पीने को दिया,
M	"रहने दो! देखें, एलियस इसे उतारने आता है यहा नहीं"।
C	तब येसु ने ऊँचे स्वर से पुकार कर प्राण त्याग दिये।
	(सब लोग कुछ समय मौन रहते हैं)
C	मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। शतपति येसु के सामने खड़ा था। वह उन्हें इस प्रकार प्राण त्यागते देख कर बोल उठा,
M	"निश्चय ही, यह मनुष्य ईश्वर का पुत्र था"।
C	वहाँ कुछ नारियाँ भी दूर से देख रही थीं। उन मं मरियम मगदलेना, छोटे याकूब और यूसुफ की माता मरियम और सलोमी थीं। जब येसु गलीलिया में थे, वे उनके साथ रह कर उनकी सेवा-परिचर्या करती थीं। बहुत-सी अन्य नारियाँ भी थीं, जो उनके साथ येरुसालेम आयी थीं। अब सन्ध्या हो गयी थीं। उस दिन शुक्रवार था, अर्थात विश्राम-दिवस के पहले दिन। इसलिए अरिमथिया का यूसुफ़, महासभा का एक सम्मानित सदस्य, जो ईश्वर के राज्य की प्रतीक्षा में था, आया। वह निर्भय हो कर पिलातुस के यहाँ गया और उसने येसु का शव माँगा। पिलातुस को आश्चर्य हुए कि वह इतने शीघ्र मर गये हैं। उसने शतपति को बुला कर पूछा कि क्या वे मर चुके हैं और शतपित से इसकी सूचना पा कर यूसुफ को शव दिलवाया। यूसुफ ने छालटी का कफ़न खरीदा और येसु को क्रूस से उतारा। उसने उन्हें कफन में लपेट कर चट्टान में खोदी हुई कब्र में रख दिया और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया। मरियम मगदलेना और यूसुफ की माता मरियम यह देख रही थीं कि येसु कहाँ रखे गये हैं।
C	यह प्रभु का सुसमाचार है।